जीवन गीत बन जाए ...

कहीं मंदिर बन रहा था। तीन श्रमिक वहां धूप में बैठकर पत्थर तोड़ रहे थे। एक राहगीर वहां से गुजर रहा था। उसने बारी-बारी से श्रमिकों से पूछा, 'क्या कर रहे हो ?'

एक से पूछा तो वह बोला, 'पत्थर तोड रहा हूं।' उसके बोल में बड़ी पीड़ा थी और स्वर भी भारी था।

दूसरे से पूछा तो वह बोला, 'आजीविका के लिए कमा रहा हूं। ' वह दुखी तो नहीं था लेकिन उसमें भी उदासी कम नहीं थी।

अजनबी तब तीसरे श्रमिक के पास गया। तो वह पत्थर तोड़ते गीत गा रहा था, उसकी आंखो में चमक थी और आनंदमय था। जब उससे भी वही सवाल पूछा तो उसने गीत रोककर कहा, मैं मंदिर निर्माण जैसे महान कार्य में अपना सहयोग दे रहा हूँ। और फिर वह गीत गुनगुनाने लगा।

जादूगर को तुमने देखा होगा, खाली टोकरी से कबूतर निकाल देता है, खाली टोकरी से सांप निकल आता है। लेकिन आप भलीभांति इस सत्यता को जानते हैं कि खाली टोकरी से कबूतर या सांप निकल नहीं सकता, पहले डाला होगा। जो डाला है, वही निकलता है। टोकरी खाली है नहीं, दिखाई पड़ती है। बस उसे देखने में ही सारी कला है। जो डाला है, वह निकाल लिया जाता है।

ब्र.कु.गंगाधर

इस पूरे जीवन को, संसार को, माया कहा है। माया का अर्थ है: इस जीवन में भी तुम जो डालते हो, वही निकल आता है। यह भी जादू का खेल है। और जादू के खेल में तो कोई और तुम्हें धोखा देता है, इस खेल में तुम अपने को ही धोखा देते हो।

जीवन-अपने आपमें कुछ भी नहीं है- कोरा कागज है। जो भी हम उस पर लिखते हैं, जीवन वहीं हो जाता है। जीवन हमारी लिखावट है। हमारी दृष्टि, देखने का ढंग, सोचने की प्रक्रिया जीवन के अर्थ को निर्धारित करती है। जीवन में कोई अर्थ नहीं है, जो हम डालते हैं, वहीं अर्थ उससे निकल आता है। इसलिए किसी ने जीवन को 'माया' कहा है। इस शब्द को समझना-बड़ा कीमती है।

जीवन का अपने में अगर कोई अर्थ होता, तब आदमी स्वतंत्र नहीं हो सकता था। तब आदमी होता परतंत्र, अर्थ से बंधा होता। जीवन में कोई भी अर्थ नहीं है-परम स्वतंत्रता है। आप जो भी अर्थ निकालना चाहो, निकाल सकते हो। सब अर्थ तुम्हारी व्याख्याएं हैं।

नीत्से का बहुत प्रसिद्ध वचन है कि 'जगत में तथ्य कोई भी नहीं है, सभी व्याख्याएं हैं।' फूल देखकर तुम कहते हो: 'सुन्दर है' यह तथ्य है या व्याख्या है ? तुम कहते हो: 'फूल सुंदर हैं तुम्हारे पास ही कोई खड़ा है, उसे फूल दिखाई ही नहीं पड़ता है। सौंदर्य का उसे पता ही नहीं चलता । तुम जब फूल को सुंदर कहते हो, तब वह भी सुन लेता है- बहरे की भांति। और अगर कोई भी जमीन पर न हो, तो फूल सुंदर होगा या नहीं ? कोई भी जमीन पर न हो तो फूल होगा, लेकिन न सुंदर होगा, न कुरूप होगा। 'होना' खाली रह जायेगा। 'होना कोरा कागज है। अर्थ तुम लिखते हो। सब अर्थ तुम्हारे हस्ताक्षर हैं। इस बात की हमें ठीक से समझ लेना चाहिए, क्योंकि इस पर बहुत कुछ निर्भर है।

पश्चिम में आधुनिक युग के करीब-करीब सभी विचारक एक बात से बहुत पीड़ित हैं, और वह है कि 'जीवन अर्थहीन- मीनिंगलेस मालूम होता है। और अगर खोज में लगते और जितना ही तुम खोजते हो, उतना ही तुम पाते हो कि कोई अर्थ नहीं है।

खोजनेवाले कभी जीवन में अर्थ नहीं पायेगा, अर्थ है नही वहां। अर्थ डालना पड़ता है- खोजना नहीं पड़ता। अगर तुम रोना चाहते हो, तो ऐसा अर्थ डालो कि जीवन उदासी बन जाये। अगर तुम हंसना चाहते हो, तो ऐसा अर्थ डालो कि जीवन हँसी बन जाये। और अगर तुम मुक्त होना चाहते हो,तो जीवन में अर्थ डालो ही मत तुम अर्थ हीनता से राजी हो जाओ।

वह चौथी बात इस कथा में नहीं है। कथा में चौथी बात आ ही नहीं सकती। तीन बातें इस कथा मे हैं, उन्हें हम समझेंगे। चौथी इसमें नहीं है। चौथी कुछ ऐसी है कि कथा में डालना कठिन है।

तीन मजदूर हैं। धूप एक जैसी है, दोपहर एक जैसी है। तीनों ही पत्थर तोड़ते हैं, पत्थर तोड़ना भी एक जैसा है। (शेष पेज 4 पर)

प्राप्तियों का आधार है -देही अभिमानी स्थिति

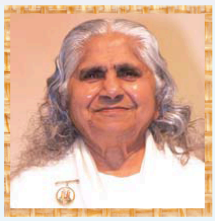

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

हमारी कमाई का आधार है -देही अभिमानी स्थिति। एक 'मैं' शब्द से ही ऊपर चढ़ते, उसी 'मैं' शब्द से ही नीचे आते। शब्द मैं है परन्तु उसी घड़ी महसूस होता है कि यह मैं ऊपर ले जाता है या नीचे ले आ रहा है। कहते हैं मुझे जहाँ से मदद मिली, उसका शुक्रिया माने तो क्या हर्जा है ? लेकिन समय पर मदद मिली तो भी अंदर से बाप की महिमा निकले। दिल से बाबा की महिमा निकले। भक्ति में भी कोई हॉस्पिटल खोलता है तो रिटर्न बाबा देता है, जो आत्मा जो सेवा करती है, उसे भगवान देता है। बीच में मैं अगर देना चाहती हूँ तो भगवान से वंचित करती हूँ, यह पाप करती हूँ। मैं कुछ रिटर्न देती हूँ, तो उसको आता यह कुछ मेरे लिए करता है। यह हिसाब-किताब जोड़ रहे हैं। मैं दूं फिर वह दे। मुझे तो चुक्तू करना है ना। अपनी ऐसी नेचर होनी चाहिए जो कोई कांटा भी निकाले तो फौरन थैंक्स निकले। ऐसे नहीं कोई कितना भी करे हम थैंक्स भी न दे। यह सभ्यता नहीं। लेकिन उनके ही गुण गाती रहूँ, यह नहीं। गुण क्यों गाऊं। उसे भाग्य बनाने का चांस मिला। रिटर्न में उसे खुशी आई। मैं सदा खुश रहने वाली नहीं तो मैं उसे खुशी कैसे दूंगी। बाबा सभी बच्चों को प्रत्यक्षफल खुशी देता है। मैं शुभचिन्तक हूँ तो बाबा को देने दूँ। बाबा जो देगा मैं नहीं दे सकती। हर आत्मा का ध्यान बाबा में हो यही हमारी सेवा है। बाबा का सिकीलधा लाडला बच्चा बनकर पूरा वर्सा लें। मेरा लाडला नहीं। हमारी भावना अनासक्त हो, अपनी कोई आसक्ति न हो। यह हमारी युद्ध बड़ी सूक्ष्म होती जा रही है। भगवान के साथ हमारा संवाद सूक्ष्म होता जाता है। सेकण्ड में बाबा सामने आता तो टच हो जाता यह बात ठीक है या नहीं है।

मैं बाबा से संकल्प में भी ज्यादा बात नहीं करती। निमित्त मात्र सेवा अर्थ वा स्व प्रति संकल्प उठा, तुरंत बाबा से रिटर्न जवाब मिल जाता है। हम मन में ज्यादा ख्याल क्यों चलायें। हम भी वरदानी हैं। कोई समय था ज्यादा विचार चलता था, अभी नहीं। जो होने वाला है सो होगा, तुम अच्छी तरह से सोच समझ हर काम करते चलो। तो फिर बाबा तुम्हारा साथी है। यह अंदर से गुप्त पुरूषार्थ हो, इसी में मजा है। सेवा एक्यूरेट टाइम पर अच्छी तरह से करनी है, फिकर अफसोस करने की बात ही नहीं। दुख शोक से पार हो गये। बाकी थोड़ी फिकर है, थोड़ा अफसोस होता है यह भी न हो। ऐसी अवस्था अंदर से जमाते चलो। एकरस अवस्था होगी तो बाबा के साथ का अनुभव होगा।

बाबा के बच्चे अभी इतने खबरदार होशियार हो गये हैं जो इतना माया को चांस नहीं दे रहे हैं। थोड़ा भी मर्यादा की लकीर से बाहर जाते तो माया शोक वाटिका में लेकर जाती है। जब हम अलबेले होते हैं, मर्यादाओं में ढीले होते हैं या सुस्ती वार करती है तो माया का चांस मिल जाता है। तो सदा अटेंशन रखना है।

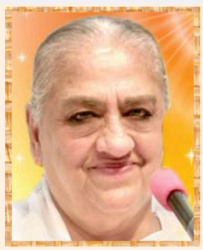

दादी हृदयमोहिनी,अति.मुख्य प्रशासिका

गुणग्राही बनो तथा गुणों का ही वर्णन करो

प्रश्न -दादीजी, सदा निर्विघ्न रहने का सहज पुरूषार्थ क्या है ?

उत्तर -देखो, सभी से गलती होती है तो उसे भी क्षमा करें। प्यार से किसी को समझाओ तो वह समझ जाते हैं। प्यार से न सुनने वाला भी सुनने लगेगा। जब हम छोटे थे बाबा हमें हर मास के लिए टॉपिक देता था कि इस मास में यह परिवर्तन करना है जो हम करते रहे। विस्तार को सार में लाना - यही निर्विघ्न बनने का सहज पुरूषार्थ है।

प्रश्न -संगठन को निर्विघ्न कैसे बनाएं ?

उत्तर -किसी की गलती को बढ़ाओ नहीं क्योंकि जिसे सुनाओगे वह दूसरे को सुनायेगा जिससे उसकी खुशबू वायुमण्डल में फैलेगी। अगर गलती करने वाला बाबा का बना है तो कुछ तो उसमें है -उम्मीद सबमें रखनी है। हरेक को प्यार से बदलना है। हरेक के अंदर गुणों को देखने का एवं शुद्ध भावना, शुद्ध परिवर्तन का चश्मा पहनो तो वह भी बदल जायेगा।

प्रश्न -हम सेवा करते हुए एक दूसरे के साथ हल्के रहें उसकी विधि क्या है ?

उत्तर - एक दूसरे के प्रति दोनों मिलकर संकल्प करो कि हम एक होकर दिखायेंगे। एक दूसरे के साथी बन जाओ, एक दूसरे को समझने की कोशिश करें और एक-दूसरे को रेस्पेक्ट से देखें।

प्रश्न -कभी-कभी उमंग-उत्साह कम हो जाता है और आलस्य-अलबेलेपन का रूप ले लेता है, उसका कारण क्या है ?

उत्तर -उमंग-उत्साह वाले भी सेंटर पर कोई न कोई होते हैं, उनके संग रूहरिहान करो। तो आपमें भी परिवर्तन आ जायेगा। उसकी विशेषता धारण करो, उसका विशेष गुण उठा लो। जब दूसरों को देखते हैं तो अलबेलापन आता है।

प्रश्न -बिना कारण के खुशी गुम क्यों होती है ?

उत्तर -मन में व्यर्थ संकल्प हैं। अगर किसी की बात दिल में चुभ जाती है तो व्यर्थ चलता है। बाबा ने कहा कि शुभ सोचना, लेकिन फिर भी बुद्धि व्यर्थ तरफ चली जाती है, उसके लिए अपनी कन्ट्रोलिंग पावर को बढ़ाओ। योग के बाद सोचो कि बाबा ने हमारे जीवन के लिए कौन सी बातें कही हैं ? संतुष्टमणि बन जाओ और दूसरों को संतुष्ट करो। दूसरे को चेंज करने से पहले अपने आपको चेंज करो। शुभभावना बहुत काम करती है जो नहीं बदलता उसे वायब्रेशन्स से ठीक करो। बाबा हमें यही पाठ पढ़ाता था कि गुणग्राही बनो, गुणों का ही वर्णन करो। कैसा भी है, बाबा का तो बना है ना! कुछ तो विशेषता उसके अंदर है ना। यह शुभभावना रखो। यह बदलेगा ही नहीं यह सोचकर उसकी तकदीर को लकीर नहीं लगाओ। मम्मा ने हरेक को बदला। मम्मा ने बहुत मेहनत की। मम्मा ने अच्छे-अच्छे सेम्पल बनाये। मम्मा सबसे प्यार से चलती थी। मम्मा को देखकर मम्मा जैसा बनने का उमंग आता था। दिलशिकस्त नहीं होते थे कि हम ऐसा बन ही नहीं सकते। मनुष्य चाहे तो क्या नहीं बन सकता। बाबा ने कहा और मैने किया। बाबा की मुरली का महत्व रखकर हमें करना ही है।

प्रश्न -पुराना संस्कार इमर्ज हो जाता है तो क्या करें ?

उत्तर -वह ड्रामा में हमारा पेपर होता है जिससे पता पड़ता है कि हमारा फाउण्डेशन कच्चा है। अगर पुरूषार्थ में फर्क पड़ता है तो उसकी पीठ कर परिवर्तन करें, अपने ऊपर ध्यान दें। बाबा से प्यार सबका है। उस समय बाबा के प्यार को याद करो बातों को याद नहीं करो। अपने दिल में बाबा को बिठा लो तो भरी हुई दिल में और कोई बैठ नहीं सकता। दिल में बाबा बैठा है तो हम अकेले नहीं हैं, उल्टा कर्म नहीं होगा।

प्रश्न -सेवा के क्षेत्र में अगर कोई हमारे जैसा करने की रीस करता है तो उस समय क्या करें ?

उत्तर -दिल में जब सदा शिव बाबा को बिठा ही दिया तो यह सब नहीं होगा, जिसकी दिल अच्छी होगी भले ही उसका सेंटर छोटा ही क्यों न हो बार-बार मन होगा उसके पास जाने का।

प्रश्न -बाबा की दिलपसंद सेवा क्या है ? बाबा सेवा के क्षेत्र में किन-किन बातों को देखते हैं ?

उत्तर -बाबा देखते सेवा करते समय कोई मिलावट तो नहीं, अगर नाम कमाने के लिए सेवा करते तो वह सेवा बाबा को पसंद नहीं आती। बाबा देखता दिल में क्या रखकर सेवा की - सेवा भाव या लालच भाव। सच्ची दिल से सेवा करने वालों पर ही साहेब राजी होता है। जिस भाव से सेवा करते उसका वायब्रेशन जिज्ञासुओं को भी आता है, थोड़े समय के लिए वह भी उमंग-उत्साह से सहयोगी बनेगा लेकिन बाद में धोखा देगा।

प्रश्न -दादीजी, बाबा के दिल में हम कैसे बैठें ?

उत्तर -बाबा को दिल में बिठाया तो हम भी तो उनके दिल में ही जाएंगे। बाबा का दिल हमसे खुश रहेगा तो हम भी बाबा के दिल में बैठेंगे क्योंकि कोई से दिल खुश नहीं होती तो क्या करते हैं -कहते हैं इसको निकालो। तो बाबा की दिल हमसे खुश हो तब बाबा के दिल में बैठेंगे।